اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले ।

(اَلْمُسْتَطْرَف ج ١ ص ٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया) । (تاريخ دمشق لابن عساكر ج ٥١ ص ١٣٨ دارالفكر بيروت)

किताब के ख़रीदार मु-तवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़्ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक-त-बतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये ।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला **(बादशाहों की हड्डियां)**

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक-त-बतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले को हिन्दी रस्मुल ख़त़ में तरतीब देते हुए दर्जे ज़ैल मुआ़-मलात को पेशे नज़र रखने की कोशिश की गई है :

(1) क़रीबुस्सौत (या'नी मिलती जुलती आवाज़ वाले) ह़ुरूफ़ के आपसी इम्तियाज़ (या'नी फ़र्क़) को वाज़ेह़ करने के लिये हिन्दी के चन्द मख़्सूस ह़ुरूफ़ के नीचे डॉट (.) लगाने का ख़ुसूसी एहतिमाम किया गया है। मा'लूमात के लिये **"ह़ुरूफ़ की पहचान"** नामी चार्ट मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये।

(2) जहां जहां तलफ़्फ़ुज़ के बिगड़ने का अन्देशा था वहां तलफ़्फ़ुज़ की दुरुस्त अदाएगी के लिये जुम्लों में डेश (–) और साकिन ह़र्फ़ के नीचे खोड़ा (्) लगाने का एहतिमाम किया गया है।

(3) उर्दू में लफ़्ज़ के बीच में जहां ع साकिन आता है उस की जगह हिन्दी में सिंगल इन्वर्टेड कोमा (') इस्ति'माल किया गया है। म-सलन دعوت،استعمال (दा'वत, इस्ति'माल) वग़ैरा।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़-लती़ पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, E-mail या SMS) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

हुरूफ़ की पहचान

फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ	थ = تھ	त = ت
ह़ = ح	छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج
ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ
ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر	ज़ = ذ
ज़ = ض	स = ص	श = ش	स = س	ज़ = ژ
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط
घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ह = ہ	व = و	न = ن	म = م	ल = ل
ई = اِی / ی	इ = اِ	ऐ = اے	ए = ے	य = ی

राबिता : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक–त–बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,

तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद–1, गुजरात Mo. 9374031409

E-mail :translationmaktabhind@dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

बादशाहों की हड्डियां[1]

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए (24 सफ़ह़ात) का येह रिसाला मुकम्मल पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप अपने दिल में म-दनी इन्क़िलाब बरपा होता महसूस फ़रमाएंगे ।

शफ़ाअ़त की बिशारत

रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने शफ़ाअ़त निशान है : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा ।

(جَمْعُ الْجَوامِع لِلسُّيُوطی ج۷ ص۱۹۹ حدیث ۲۲۳۵۲)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मन्क़ूल है कि एक बादशाह शिकार के लिये निकला मगर जंगल में अपने मुसाह़िबों से बिछड़ गया । उस ने एक कमज़ोर और ग़मगीन नौ जवान को देखा जो **इन्सानी हड्डियों** को उलट पलट रहा है, पूछा : तुम्हारी

---

1 : येह बयान **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के तीन रोज़ा सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ (बाबुल इस्लाम सिन्ध) 1,2,3 स-फ़रुल मुज़फ़्फ़र 1424 सि.हि. बरोज़ इतवार (2003 ई. सह़राए मदीना बाबुल मदीना कराची) में फ़रमाया था । काफ़ी तरमीम व इज़ाफ़े के साथ तह़रीरन ह़ाज़िरे ख़िदमत है । **-मजलिसे मक-त-बतुल मदीना**

येह ह़ालत कैसे हो गई है ? और इस सुनसान बयाबान में अकेले क्या कर रहे हो ? उस ने जवाब दिया : मेरा येह ह़ाल इस वज्ह से है कि मुझे त़वील सफ़र दरपेश है। दो मुवक्कल (दिन और रात की सूरत में) मेरे पीछे लगे हुए हैं और मुझे ख़ौफ़ज़दा कर के आगे को दौड़ा रहे हैं। या'नी जो भी दिन और रात गुज़रते हैं वोह मुझे मौत से क़रीब करते चले जा रहे हैं, मेरे सामने तंगो तारीक तक्लीफ़ों भरी **क़ब्र** है, आह ! गलने सड़ने के लिये अन्क़रीब मुझे ज़ेरे ज़मीन रख दिया जाएगा, हाए ! हाए ! वहां तंगी व परेशानी होगी, वहां मुझे कीड़ों की ख़ूराक बनना होगा, मेरी हड्डियां जुदा जुदा हो जाएंगी और इसी पर इक्तिफ़ा नहीं बल्कि इस के बा'द क़ियामत बरपा होगी जो कि निहायत ही कठिन मर्ह़ला होगा। मा'लूम नहीं बा'द अज़ां मेरा जन्नत ठिकाना होगा या مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जहन्नम में जाना होगा। तुम ही बताओ, जो इतने ख़त़रनाक मराह़िल से दो चार हो वोह भला कैसे ख़ुशी मनाए ? येह बातें सुन कर **बादशाह** रन्जो मलाल से बेह़ाल हो कर घोड़े से उतरा और उस के सामने बैठ कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : ऐ नौ जवान ! आप की बातों ने मेरा सारा चैन छीन लिया और दिल को अपनी गरिफ़्त में ले लिया, ज़रा इन बातों की मज़ीद वज़ाह़त फ़रमा दीजिये ! तो उस ने कहा : येह मेरे सामने जो हड्डियां जम्अ़ हैं इन्हें देख रहे हो ! येह ऐसे **बादशाहों की हड्डियां** हैं जिन्हें दुन्या ने अपनी ज़ीनत में उलझा कर फ़रेब में मुब्तला कर दिया था, येह ख़ुद तो लोगों पर ह़ुकूमत करते रहे मगर ग़फ़्लत ने इन के दिलों पर ह़ुक्मरानी की, येह लोग आख़िरत से ग़ाफ़िल रहे यहां तक कि इन्हें अचानक मौत आ गई ! इन की तमाम आरज़ूएं धरी की धरी रह गईं, ने'मतें सल्ब कर ली गईं, क़ब्रों में इन के जिस्म गल सड़ गए और आज इन्तिहाई कस्म-पुर्सी के आ़लम में इन की हड्डियां बिखरी

पड़ी हैं। अन्क़रीब इन की हड्डियों को फिर ज़िन्दगी मिलेगी और इन के जिस्म मुकम्मल हो जाएंगे, फिर इन्हें इन के आ'माल का बदला मिलेगा, और येह ने'मतों वाले घर जन्नत या अ़ज़ाब वाले घर दोज़ख़ में जाएंगे। इतना कहने के बा'द वोह नौ जवान **बादशाह** की आंखों से ओझल हो कर मा'लूम नहीं कहां चला गया ! इधर ख़ुद्दाम जब ढूंडते हुए पहुंचे तो बादशाह का चेहरा उदास और उस की आंखों से सैले अश्क रवां था। रात आई तो बादशाह ने लिबासे शाही उतारा और दो चादरें जिस्म पर डाल कर इबादत के लिये जंगल की त़रफ़ निकल गया। फिर उस का पता न चला कि कहां गया। (روضُ الرّیاحِین ص ۲۰۰) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन सब पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।**

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस ह़िकायत में सफ़रे आख़िरत की त़वालत और इस में पेश आने वाली ह़ालत का किस क़दर रिक़्क़त अंगेज़ बयान है। पुर असरार मुबल्लिग़ ने **बादशाहों की हड्डियां** सामने रख कर क़ब्रो ह़श्र की जो मन्ज़र कशी की वोह वाक़ेई इ़ब्रत नाक है। क़ब्रो ह़श्र का मुआ़-मला निहायत होलनाक है मगर इस से क़ब्ल मौत का मर्ह़ला भी इन्तिहाई कर्ब-नाक है। इस में नज़्अ़ की सख़्तियों, म-लकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام को देखने और बुरे ख़ातिमे के ख़ौफ़ जैसे इन्तिहाई होशरुबा मुआ़-मलात हैं। चुनान्चे

कांटेदार शाख़

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने ताबेई़ बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار से फ़रमाया : ऐ का'ब (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه) ! हमें मौत के बारे में बताओ !

ह़ज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار ने अ़र्ज़ की : मौत उस टहनी की मानिन्द है जिस में कसीर कांटे हों और उसे किसी शख़्स के पेट में दाख़िल किया जाए और जब हर कांटा एक एक रग में पैवस्त हो जाए फिर कोई खींचने वाला उस शाख़ को ज़ोर से खींचे तो वोह (कांटेदार टहनी) कुछ (गोश्त के रेशे वग़ैरा) साथ ले आए और कुछ बाक़ी छोड़ दे।

(مصنّف ابن ابی شیبة ج ۸ ص ۳۱۲ حدیث ۱۲۲)

तलवार की हज़ार ज़र्बें

ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा, शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم जिहाद की तरग़ीब दिलाते और फ़रमाते, अगर तुम शहीद नहीं होगे तो मर जाओगे ! उस ज़ात की क़सम ! जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है, तलवार की हज़ार ज़र्बें भी मेरे नज़्दीक बिस्तर पर मरने से आसान हैं।

(اِحیاءُ العلوم ج ۵ ص ۲۰۹)

ख़ौफ़नाक सूरत

एक रिवायत में है कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम **ख़लीलुल्लाह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने म-लकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام से फ़रमाया : क्या तुम मुझे वोह सूरत दिखा सकते हो ! जिस से किसी गुनाहगार की रूह़ क़ब्ज़ करते हो। म-लकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की : आप عَلَيْهِ السَّلَام सह नहीं सकेंगे। ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम **ख़लीलुल्लाह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : क्यूं नहीं (मैं देख लूंगा)। उन्हों ने कहा : तो आप मुझ से अलग हो जाइये। ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम **ख़लीलुल्लाह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام अलग हो गए। फिर जब उधर मु-तवज्जेह हुए तो मुला-ह़ज़ा किया, काले कपड़ों में मल्बूस एक सियाह फ़ाम शख़्स है जिस के बाल खड़े हैं, बदबू आ रही है उस के मुंह और नथनों से आग और धूवां निकल रहा है। (येह

देख कर) ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम **ख़लीलुल्लाह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर बेहोशी त़ारी हो गई, जब होश आया तो म-लकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام अपनी अस्ल ह़ालत पर आ चुके थे। आप عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : ऐ म-लकुल मौत (عَلَيْهِ السَّلَام) ! मौत के वक़्त सिर्फ़ तुम्हारी सूरत देखना ही गुनाहगार के लिये बहुत बड़ा अ़ज़ाब है। (اِحیاءُ العلوم ج۵ ص۲۱۰)

मौत का राज

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मौत के झटकों और नज़्अ़ की सख़्तियों का इ़ल्म होने के बा वुजूद अफ़्सोस ! हम इस दुन्या में इ़त्मीनान की ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं, आह ! हमारा हर सांस मौत की त़रफ़ गोया एक क़दम और हमारे शबो रोज़ मौत की जानिब गोया एक एक मील हैं। चाहे कोई ज़िन्दगी की कितनी ही बहारें लूटने में काम्याब हो जाए मगर उसे मौत की ख़ज़ां से दो चार होना ही पड़ेगा। कोई चाहे कितना ही ऐ़शो इ़शरत की ज़िन्दगी गुज़ारे मगर मौत तमाम तर लज़्ज़तों को ख़त्म कर के रहेगी। कोई ख़्वाह कितना ही अहलो इ़याल और दोस्त व अह़बाब की रौनक़ों में दिलशाद हो ले मगर मौत उसे जुदाई का ग़म दे कर रहेगी, आह ! कितने मग़रूर आबरू दार मौत के हाथों ज़लीलो ख़्वार हो गए, न जाने कितने ज़ालिम हुक्मरानों को मौत ने उन के बुलन्द मह़ल्लात से निकाल कर **क़ब्र** की काल कोठड़ी में डाल दिया। न जाने कैसे कैसे अफ़्सरों को मौत ने कोठियों की वुस्अ़तों से उठा कर **क़ब्र** की तंगियों में पहुंचा दिया, कितने ही वज़ीरों को बंगलों की चकाचौंद रोशनियों से **क़ब्र** की तारीकियों में मुन्तक़िल कर दिया। आह ! मौत ही के सबब बहुत सारे **दूल्हे** मचल्ते अरमानों के साथ आरास्ता व पैरास्ता ह़-ज-लए अ़रूसी में दाख़िल होने

के बजाए कीड़े मकोड़ों से उभरती तंगो तारीक क़ब्रों में चले गए, न जाने कितने ही नौ जवान **शादी** की मसर्रतों के ज़रीए अपनी जवानी की बहारें देखने से क़ब्ल ही मौत का शिकार हो कर वहशत नाक **क़ब्रों** में जा पहुंचे।

बे वफ़ा दुन्या पे मत कर ए 'तिबार — तू अचानक मौत का होगा शिकार
मौत आई पहलवां भी चल दिये — ख़ूब सूरत नौ जवां भी चल दिये
चल दिये दुन्या से सब शाहो गदा — कोई भी दुन्या में कब बाक़ी रहा !
तू ख़ुशी के फूल लेगा कब तलक ?
तू यहां ज़िन्दा रहेगा कब तलक !

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 709, 711)

वीरान महल्लात

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'सियत पर डटे रहने के सबब अगर दुन्या भी जाती रही और दीन भी बरबाद हो गया तो क्या करोगे ! **अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला** पारह **17 सू-रतुल ह़ज्ज** की 45वीं आयत में इर्शाद फ़रमाता है :

فَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ فَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا وَبِئْرٍ مُّعَطَّلَةٍ وَّقَصْرٍ مَّشِيْدٍ ﴿۴۵﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और कितनी ही बस्तियां हम ने खपा दीं[1] कि वोह सितम-गार[2] थीं, तो अब वोह अपनी छतों पर डही[3] पड़ी हैं और कितने कूंएं बेकार पड़े[4] और कितने महल कच किये हुए।[5]

1 : या'नी वहां के रहने वालों समेत हलाक कर दीं। **2 :** या'नी ज़ालिम कुफ़्फ़ार पर मुश्तमिल। **3 :** गिरी। **4 :** या'नी उन से कोई पानी भरने वाला नहीं। **5 :** या'नी वीरान पड़े हैं।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की । (عبدالرزاق)

क़ब्र की तारीकियां

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه दौराने खुत्बा फ़रमाया करते : कहां हैं वोह ख़ूब सूरत चेहरे ? कहां हैं अपनी जवानियों पर इतराने वाले ! किधर गए वोह बादशाह जिन्हों ने आलीशान शहर ता'मीर करवाए और उन्हें मज़बूत क़ल्ओं से तक़्वियत बख़्शी ? किधर चले गए मैदाने जंग में ग़ालिब आने वाले ? बेशक ज़माने ने उन को ज़लील कर दिया और अब येह क़ब्र की तारीकियों में पड़े हैं । जल्दी करो ! नेकियों में सब्क़त करो ! और नजात तलब करो ।

(كتاب ذم الدنيا مع موسوعة لابن ابى الدنيا ج٥ص٣٨حديث٤٦)

ग़फ़्लत की चादर ताने सोना

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه हमें **क़ब्र** की तारीकियों का एहसास दिला कर ख़्वाबे ग़फ़्लत से बेदार फ़रमा रहे हैं । शिद्दते मौत को सहना, तारीकिये गोर, उस की वहशत, कीड़े मकोड़ों की ख़ूराक बनना, हड्डियों का बोसीदा हो जाना, ता क़ियामत क़ब्र में पड़े रहना और हश्र व हिसाबे आ'माल, इन तमाम मुआ-मलात को जानने के बा वुजूद ग़फ़्लत की चादर तान कर सोए रहना यक़ीनन तश्वीश नाक है ।

गिर्यए उस्मानी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه

हज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नूरैन, जामेउल क़ुरआन उस्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه जब किसी **क़ब्र** के क़रीब खड़े होते तो इस क़दर रोते कि आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की दाढ़ी मुबारक तर हो जाती । इस बारे में आप

رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से इस्तिफ़्सार किया गया कि आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه जन्नत व दोज़ख़ के तज़्किरे पर इतना नहीं रोते मगर जब किसी **क़ब्र** के क़रीब खड़े होते हैं तो इस क़दर गिर्या व ज़ारी फ़रमाते हैं इस का क्या सबब है ? ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : मैं ने सय्यिदुल मुर-सलीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना है कि बेशक आख़िरत की सब से पहली मन्ज़िल **क़ब्र** है, **क़ब्र** वाले ने इस से नजात पाई तो बा'द का मुआ़-मला आसान है और अगर इस से नजात न पाई तो बा'द का मुआ़-मला ज़ियादा सख़्त है। (ابنِ ماجه ج٤ص٥٠٠حديث ٤٢٦٧)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! हमारे आक़ा उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को दुन्या ही में ब ज़ुबाने मालिके ख़ुल्दो कौसर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जन्नत की बिशारत मिलने के बा वुजूद किस क़दर ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ लाह़िक़ रहता और एक हमारी ह़ालत है कि हमें अपने ठिकाने का इ़ल्म नहीं इस के बा वुजूद गुनाहों के दलदल में अपने आप को धंसाते चले जा रहे हैं और मा'सियत के अम्बार के बा वुजूद ख़ुशियों से झूमे जा रहे हैं और **क़ब्र** की दर्दनाक पुकार से यक्सर ग़ाफ़िल हैं।

क़ब्र की पुकार

ह़ज़रते सय्यिदुना फ़क़ीह अबुल्लैस समर क़न्दी ह़-नफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی नक़्ल फ़रमाते हैं कि क़ब्र रोज़ाना पांच मर्तबा येह निदा करती है, ﴿1﴾ ऐ आदमी ! तू मेरी पीठ पर चलता है ह़ालां कि मेरा पेट तेरा ठिकाना है ﴿2﴾ ऐ आदमी ! तू मुझ पर उ़म्दा उ़म्दा खाने खाता है अ़न्क़रीब मेरे पेट में तुझे कीड़े खाएंगे ﴿3﴾ ऐ आदमी ! तू मेरी पीठ पर

हंसता है जल्द ही मेरे अन्दर आ कर रोएगा ﴾4﴿ ऐ आदमी ! तू मेरी पीठ पर ख़ुशियां मनाता है अ़न्क़रीब मुझ में ग़मगीन होगा ﴾5﴿ ऐ आदमी ! तू मेरी पीठ पर गुनाह करता है अ़न्क़रीब मेरे पेट में मुब्तलाए अ़ज़ाब होगा। (تَنۡبِیۡہُ الۡغافلین ص۲۳)

क़ब्र रोज़ाना येह करती है पुकार — मुझ में हैं कीड़े मकोड़े बे शुमार
याद रख ! मैं हूं अंधेरी कोठड़ी — तुझ को होगी मुझ में सुन वह़्शत बड़ी
मेरे अन्दर तू अकेला आएगा — हां मगर आ'माल लेता आएगा
तेरी त़ाक़त तेरा फ़न ओ़हदा तेरा — कुछ न काम आएगा सरमाया तेरा
दौलते दुन्या के पीछे तू न जा — आख़िरत में माल का है काम क्या
दिल से दुन्या की मह़ब्बत दूर कर — दिल नबी के इ़श्क़ से मा'मूर कर

लन्दनो पेरिस के सपने छोड़ दे
बस मदीने ही से रिश्ता जोड़ ले

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 709, 711)

रूह़ की दर्दनाक बातें

मन्क़ूल है कि रूह़ जब जिस्म से जुदा होती है और उस पर **सात दिन** गुज़रते हैं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ करती है : ऐ रब عَزَّوَجَلَّ ! मुझे इजाज़त अ़त़ा फ़रमा कि मैं अपने जिस्म का ह़ाल दरयाफ़्त करूं, तो उसे इजाज़त मिल जाती है। फिर वोह अपनी **क़ब्र** की त़रफ़ आती है, उसे दूर से देखती, और अपने जिस्म को मुला–ह़ज़ा करती है कि वोह मु–तग़य्यर (या'नी बदला हुवा) है और उस के नथनों, मुंह, आंखों और कानों से पानी रवां है। वोह अपने जिस्म से कहती है : "बे मिसाल ह़ुस्नो जमाल के बा'द अब तू इस ह़ाल में है !" येह कह कर चली जाती

है। फिर **सात दिन** के बा'द इजाज़त ले कर दोबारा **क़ब्र** पर आती और दूर से देखती है कि मुर्दे के मुंह का पानी ख़ून मिली पीप, आंखों का पानी ख़ालिस पीप और नाक का पानी ख़ून बन चुका है। तो उस से कहती है : ''अब तू इस ह़ाल पर पहुंच चुका है!'' येह कह कर परवाज़ कर जाती है। फिर **सात रोज़** के बा'द इजाज़त ले कर उसी त़रह़ दूर से देखती है, तो ह़ालत येह होती है कि आंखों की पुतलियां चेहरे पर ढलक चुकी हैं, पीप कीड़ों में तब्दील हो चुकी है, कीड़े उस के मुंह से दाख़िल हो कर नाक से निकल रहे हैं। तब वोह जिस्म से कहती है : तू नाज़ो नेअ़म में पलने के बा'द अब इस ह़ाल को पहुंच गया है! **(الرَّوْضُ الْفائق ص۲۸۳)**

नेक शख़्स की निशानी

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ह़्ह़ाक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْرَّزَّاق फ़रमाते हैं, एक शख़्स ने इस्तिफ़्सार किया, **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! लोगों में सब से ज़ियादा ज़ाहिद कौन है? आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स **क़ब्र** और गल सड़ जाने को न भूले, दुन्या की ज़ीनत को छोड़ दे, फ़ना होने वाली ज़िन्दगी पर बाक़ी रहने वाली को तरजीह़ दे और कल आने वाले दिन को अपनी ज़िन्दगी में गिनती न करे नीज़ अपने आप को **क़ब्र** वालों में शुमार करे। **(مصنّف ابن ابی شَیْبہ، ج ۸ ص ۱۲۷ حدیث ۱۷)**

जैसी करनी वैसी भरनी

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाया करते : बेशक तुम गर्दिशे अय्याम में हो और मौत अचानक आ जाएगी, जिस ने भलाई का बीज बोया अ़न्क़रीब वोह उम्मीद की फ़स्ल काटेगा

और जिस ने बुराई काश्त की जल्द ही नदामत की खेती पाएगा। हर काश्त-कार के लिये उसी की खेती है।

(اَلزّھد لاحمد بن حنبل ص۱۸۳ حدیث۸۸۹)

अभी से तय्यारी कर लीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई अ़क़्ल मन्द वोही है जो मौत से क़ब्ल मौत की तय्यारी करते हुए नेकियों का ज़ख़ीरा इकठ्ठा कर ले और सुन्नतों का म-दनी चराग़ क़ब्र में साथ ले ले और यूं **क़ब्र** की रोशनी का इन्तिज़ाम कर ले, वरना क़ब्र हरगिज़ येह लिहाज़ न करेगी कि मेरे अन्दर कौन आया ! **अमीर** हो या फ़क़ीर, वज़ीर हो या उस का मुशीर, ह़ाकिम हो या महकूम, अफ़्सर हो या चपरासी, सेठ हो या मुलाज़िम, डॉक्टर हो या मरीज़, ठेकेदार हो या मज़दूर। अगर किसी के साथ भी तोशए आख़िरत में कमी रही, **नमाज़ें** क़स्दन क़ज़ा कीं, र-मज़ान शरीफ़ के रोज़े बिला उ़ज़्रे शर-ई न रखे, फ़र्ज़ होते हुए भी ज़कात न दी, ह़ज फ़र्ज़ था मगर अदा न किया, बा वुजूदे क़ुदरत शर-ई पर्दा नाफ़िज़ न किया, मां बाप की ना फ़रमानी की, झूट, ग़ीबत, चुग़ली की आ़दत रही, फ़िल्में, डिरामे देखते रहे, गाने बाजे सुनते रहे, दाढ़ी मुंडवाते या एक मुठ्ठी से घटाते रहे। अल ग़रज़ ख़ूब गुनाहों का बाज़ार गर्म रखा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नाराज़ी की सूरत में सिवाए ह़सरत व नदामत के कुछ हाथ न आएगा। जब कि जिस ने **अल्लाह तआ़ला** को राज़ी कर लिया जिस के बहुत से त़रीक़े हैं जिन में से येह भी है कि **जिस** ने फ़राइज़ के साथ साथ नवाफ़िल की भी पाबन्दी की, **र-मज़ानुल मुबारक** के इलावा नफ़्ल रोज़े भी रखे, कूचा कूचा, गली गली नेकी की

दा'वत की धूमें मचाईं, क़ुरआने करीम की ता'लीम न सिर्फ़ ख़ुद ह़ासिल की बल्कि दूसरों को भी दी, चोकदर्स देने में हिच-किचाहट महसूस न की, घर दर्स जारी किया, सुन्नतों की तरबियत के **म-दनी क़ाफ़िलों** में बा क़ाइदगी से सफ़र करने के साथ साथ दीगर मुसल्मानों को भी इस की तरग़ीब दी, रोज़ाना **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह अपने ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाया, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़ज़्लो करम से ईमान सलामत ले कर दुन्या से रुख़्सत हुवा तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ उस की क़ब्र में ह़श्र तक रह़मतों का दरिया मौजें मारता रहेगा और नूरे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चश्मे लहराते रहेंगे।

क़ब्र में लहराएंगे ता ह़श्र चश्मे नूर के
जल्वा फ़रमा होगी जब त़ल्अ़त रसूलुल्लाह की

(ह़दाइक़े बख़्शिश)

क़ियामत की मन्ज़र कशी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आह ! पैदा हो ही गए तो अब मरना भी पड़ेगा। हाए हाए ! हम गुनहगारों का क्या बनेगा ! मौत की तकालीफ़ और **क़ब्र** में मुद्दतों गलते सड़ते रहने ही पर इक्तिफ़ा नहीं, **क़ब्रों** से दोबारा उठना और क़ियामत का भी सामना करना है, क़ियामत का दिन सख़्त होलनाक है और इस में कई दुश्वार गुज़ार घाटियां हैं। क़ियामत के भयानक मन्ज़र का तसव्वुर जमाने की कोशिश कीजिये, आह ! आह ! आह ! सितारे झड़ जाएंगे और चांद व सूरज के बे नूर होने के बाइ़स घुप अंधेरा छा जाएगा मगर रोशनी ख़त्म होने के बा वुजूद तपिश

बर क़रार रहेगी। अहले महशर इसी हालत में होंगे कि अचानक आस्मान टूट पड़ेगा और उस के फटने की आवाज़ किस क़दर भयानक होगी इस का तसव्वुर कीजिये, पहाड़ धुनी हुई रूई की तरह उड़ जाएंगे और लोग ऐसे होंगे जैसे फैले हुए पतंगे। कोई किसी का पुरसाने हाल न होगा, भाई भाई से आंख न मिलाएगा, दोस्त दोस्त से मुंह छुपाएगा, बेटा बाप से पीछा छुड़ाएगा, शोहर बीवी को दूर हटाएगा और बेटा मां का बोझ न उठाएगा। अल ग़रज़ कोई भी किसी के काम न आएगा। **सुनो ! सुनो !** दिल के कानों से सुनो 30वें पारे की **सू-रतुल क़ारिअह** में क़ियामत की इस तरह मन्ज़र कशी की गई है :

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○
اَلْقَارِعَةُ ۙ﴿۱﴾ مَا الْقَارِعَةُ ۚ﴿۲﴾
وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الْقَارِعَةُ ؕ﴿۳﴾ يَوْمَ
يَكُوْنُ النَّاسُ كَالْفَرَاشِ الْمَبْثُوْثِ ۙ﴿۴﴾
وَتَكُوْنُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ الْمَنْفُوْشِ ؕ﴿۵﴾
فَاَمَّا مَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ ۙ﴿۶﴾ فَهُوَ فِيْ
عِيْشَةٍ رَّاضِيَةٍ ؕ﴿۷﴾ وَاَمَّا مَنْ خَفَّتْ
مَوَازِيْنُهٗ ۙ﴿۸﴾ فَاُمُّهٗ هَاوِيَةٌ ؕ﴿۹﴾ وَمَآ
اَدْرٰىكَ مَا هِيَهْ ؕ﴿۱۰﴾ نَارٌ حَامِيَةٌ ۢ﴿۱۱﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रहूम वाला। दिल दहलाने वाली, क्या वोह दहलाने वाली ? और तू ने क्या जाना क्या है दहलाने वाली। जिस दिन आदमी होंगे जेसे फैले पतंगे, और पहाड़ होंगे जैसे धुन्की ऊन। तो जिस की तोलें[1] भारी हुई वोह तो मन मानते ऐश में हैं और जिस की तोलें हलकी पड़ीं वोह नीचा दिखाने वाली गोद में है और तू ने क्या जाना क्या नीचा दिखाने वाली ? एक आग शो'ले मारती।

1 : या'नी वज़्न में नेकियां।

नाज़ों का पाला काम न आएगा

ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इयाज़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि बरोज़े क़ियामत मां अपने बेटे से मिलेगी और कहेगी : ऐ बेटे ! क्या तू मेरे पेट में न रहा ? क्या तू ने मेरा दूध न पिया ? बेटा अ़र्ज़ करेगा : ऐ मेरी मां ! क्यूं नहीं। इस पर मां कहेगी : बेटा ! मेरे गुनाहों का बोझ बहुत भारी है इस में से तू सिर्फ़ एक गुनाह ही उठा ले। बेटा कहेगा : मेरी मां ! मुझ से दूर हो जा, मुझे अपनी फ़िक्र लाह़िक़ है, मैं तेरा या किसी और का बोझ नहीं उठा सकता। (الرَّوْضُ الْفَائِق ص ١٥٥)

पसीने में डुब्कियां

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इन तक्लीफ़ों के इ़लावा, भूके प्यासे रहने और ह़िसाबो किताब की तकालीफ़ का भी सामना करना होगा। वहां पर अ़र्श के साए के इ़लावा कोई साया न होगा जो मुक़र्रबीन ही को नसीब होगा। इन के इ़लावा लोग सूरज की गरमी में सिसक्ते बिलक्ते होंगे, कस्रते इज़्दिह़ाम के बाइ़स एक दूसरे को धक्के दे रहे होंगे, नीज़ गुनाहों की नदामत, सांसों की ह़रारत, सूरज की तमाज़त और ख़ौफ़ व दहशत के सबब पसीना बह कर ज़मीन में सत्तर गज़ तक जज़्ब हो जाएगा। फिर लोगों के गुनाहों के मुत़ाबिक़ किसी के टख़्नों, किसी के घुटनों, बा'ज़ों के सीनों और बा'ज़ों के कानों की लौ तक चढ़ेगा और कोई बद नसीब तो उस में डुब्कियां खा रहा होगा। चुनान्चे

कानों तक पसीना

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब

صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पारह 30 **सू-रतुल मुत़फ़्फ़िफ़ीन** की छटी आयते करीमा तिलावत फ़रमाई :

يَوْمَ يَقُوْمُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٦

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : जिस दिन सब लोग रब्बुल आ़-लमीन के हुज़ूर खड़े होंगे।

फिर फ़रमाया : क़ियामत के दिन बा'ज़ लोगों का पसीना इस क़दर होगा कि निस्फ़ (या'नी आधे) कानों तक पहुंच जाएगा।

(بُخاری ج٤ص٢٥٥، حدیث ٦٥٣١)

पसीने की लगाम

एक रिवायत में यूं है कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क़ियामत के दिन सूरज ज़मीन से क़रीब हो जाएगा तो लोगों का पसीना बहेगा बा'ज़ लोगों का पसीना उन की एड़ियों तक, बा'ज़ का निस्फ़ (आधी) पिंडलियों तक, बा'ज़ का घुटनों तक, कुछ का रानों तक, बा'ज़ लोगों का कमर तक और कुछ का कांधों तक और कुछ का गरदन तक और कुछ का मुंह तक पहुंचेगा। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने दस्ते मुबारक से इशारा फ़रमाया कि वोह उन को लगाम डाल देगा और बा'ज़ को पसीना ढांप लेगा और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने हाथ मुबारक को सरे अन्वर पर रखा। **(مُسْنَدِ امام احمدبن حنبل ج ٦ ص ١٤٦ حدیث ١٧٤٤٤)**

नज़र न फ़रमाएगा

सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पारह 30 **सू-रतुल मुत़फ़्फ़िफ़ीन** की छटी आयते करीमा तिलावत फ़रमाई :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (ابن عساکر)

يَوْمَ يَقُوْمُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٦

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : जिस दिन सब लोग रब्बुल आ-लमीन के हुज़ूर खड़े होंगे।

फिर फ़रमाया : "तुम्हारा क्या हाल होगा जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम सब को 50 हज़ार साल वाले (या'नी क़ियामत के) दिन जम्अ़ करेगा, जैसे तरकश में तीर जम्अ़ किये जाते हैं फिर तुम्हारी त़रफ़ नज़र नहीं फ़रमाएगा।"

(اَلْمُستَدرَك لِلْحاكِم ج٥ ص ٧٩٠ حديث٨٧٤٧)

पचास हज़ार साल तक खड़े रहेंगे

हज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : तुम्हारा उस दिन के बारे में क्या ख़याल है जब लोग पचास हज़ार साल की मिक़्दार अपने क़दमों पर खड़े होंगे ! इस में न तो एक लुक़्मा खाने को मिलेगा और न ही एक घूंट पानी मिले। ह़त्ता कि जब प्यास से उन की गरदनें लटक जाएंगी और भूक से उन के पेट जल जाएंगे तो उन्हें जानिबे दोज़ख़ ले जा कर खौलता हुवा पानी पिलाया जाएगा। थक हार कर बाहम कलाम करेंगे कि आओ ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में किसी को सिफ़ारिश के लिये दर-ख़्वास्त करें इस त़रह़ वोह अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की त़रफ़ रुख़ करेंगे मगर वोह जिस नबी عَلَيْهِ السَّلَام की बारगाह में ह़ाज़िरी देंगे वोह उन्हें फ़रमाएंगे : "मुझे मेरे ह़ाल पर छोड़ दो ! मुझे मेरे अपने मुआ़-मले ने दूसरों से बे नियाज़ कर दिया है नीज़ उ़ज़्र करेंगे कि **अल्लाह तआ़ला** ने आज सख़्त ग़ज़ब फ़रमाया है कि इस क़दर ग़ज़ब इस से पहले कभी न फ़रमाया और न कभी आयिन्दा

फ़रमाएगा।'' हत्ता कि महबूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, ताजदारे रिसालत, नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिन की इजाज़त मिलेगी उन की शफ़ाअ़त फ़रमाएंगे। (اِحیاءُ الْعُلُوم ج ۵ ص ۲۷۳)

कहेंगे और नबी اِذْهَبُوْا اِلٰی غَیْرِی
मेरे हुज़ूर के लब पर اَنَا لَهَا *होगा*

(ज़ौक़े ना'त)

सज़ाएं कैसे बरदाश्त होंगी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! क़ियामत की होलनाकियों और अहले महशर की तक्लीफ़ों की येह तो एक झलक है और येह परेशानियां भी ह़िसाबो किताब और जहन्नम के अ़ज़ाब से पहले की हैं। ज़रा ग़ौर तो कीजिये कि आज अगर ज़रा सी गरमी बढ़ जाए तो हम तड़प उठते हैं, अगर बिजली चली जाए तो अंधेरे में हम पर वह़शत त़ारी हो जाती है, एक वक़्त के खाने में ताख़ीर हो जाए तो भूक से निढाल हो जाते हैं, शिद्दते प्यास में पानी न मिले तो सिसक जाते हैं, गर्मियों में ह़ब्स हो जाए (या'नी हवा चलना रुक जाए) तो बे क़रार हो जाते हैं, सूरज की तपिश के सबब पसीने की कसरत हो तो बिलबिला उठते हैं, ट्राफ़िक जाम हो जाए तो बेज़ार हो जाते हैं, आंख में अगर गर्द का ज़र्रा पड़ जाए तो बेचैन हो जाते हैं, वालिद साह़िब डांट दें तो बुरी त़रह़ झेंप जाते हैं, उस्ताद झिड़क दे तो सहम जाते हैं। आह ! आह ! आह ! अगर **नमाज़** क़ज़ा करने के सबब आग का अ़ज़ाब दे दिया गया, **र-मज़ानुल मुबारक** का रोज़ा तर्क करने की वज्ह से अगर भूक प्यास मुसल्लत़ कर दी गई, **ज़कात** न देने

के बाइस अगर दहक्ते हुए सिक्के जिस्म पर दाग़ दिये गए, **बद निगाही** करने के सबब अगर आंखों में आग भर दी गई, लोगों की ख़ुफ़्या बातें, गाने बाजे, ग़ीबतें, गन्दे चुटकुले वग़ैरा सुनने की वज्ह से अगर कानों में **पिघला हुवा सीसा** उंडेल दिया गया, मां बाप की ना फ़रमानी और क़त्ए रेहमी (या'नी रिश्तेदारों से तअ़ल्लुक़ात तोड़ देने) के बाइस **अ़ज़ाब** में मुब्तला कर दिये गए तो क्या करेंगे ? अब भी वक़्त है मान जाइये, क़ियामत की राहत और **मुस्तफ़ा जाने रहमत** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त के हुसूल के लिये सिद्क़े दिल के साथ गुनाहों से तौबा कर लीजिये।

कर ले तौबा रब की रहमत है बड़ी
क़ब्र में वरना सज़ा होगी कड़ी

क़ियामत में आसानी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! क़ियामत के 50 हज़ार सालह दिन में जहां **कुफ़्फ़ार** ना क़ाबिले बरदाश्त तकालीफ़ से दो चार होंगे वहां **मुअमिनीन** पर झूम झूम कर रहमतें बरस रही होंगी चुनान्चे सरकारे मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है **:** उस ज़ाते पाक की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है कि क़ियामत का दिन मोमिन पर आसान होगा हत्ता कि दुन्या में फ़र्ज़ नमाज़ की अदाएगी से भी थोड़ा वक़्त मा'लूम होगा। **(مُسنَدِ امام اَحمد بن حنبل ج٤ ص ١٥١ حدیث ١١٧١٧)**

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर इसी तरह ग़फ़्लत भरी ज़िन्दगी गुज़ार कर दुन्या से रुख़्सत हो गए और गुनाहों के बाइस **अल्लाह**

عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नाराज़ हो गए और अगर ईमान बरबाद हो गया तो ख़ुदा की क़सम ! सख़्त पछतावा होगा। **सुनो ! सुनो !** 30वें पारे की **सू-रतुन्नाज़िआ़त** की आयात नम्बर 34 ता 41 में फ़रमाया जा रहा है :

فَاِذَا جَآءَتِ الطَّآمَّةُ الْكُبْرٰى ﴿۳۴﴾ يَوْمَ يَتَذَكَّرُ الْاِنْسَانُ مَا سَعٰى ﴿۳۵﴾ وَبُرِّزَتِ الْجَحِيْمُ لِمَنْ يَّرٰى ﴿۳۶﴾ فَاَمَّا مَنْ طَغٰى ﴿۳۷﴾ وَاٰثَرَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ﴿۳۸﴾ فَاِنَّ الْجَحِيْمَ هِيَ الْمَاْوٰى ﴿۳۹﴾ وَاَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ وَنَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوٰى ﴿۴۰﴾ فَاِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ الْمَاْوٰى ﴿۴۱﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : फिर जब आएगी वोह आ़म मुसीबत सब से बड़ी[1] उस दिन आदमी याद करेगा जो कोशिश की थी[2] और जहन्नम हर देखने वाले पर ज़ाहिर की जाएगी, तो वोह जिस ने सरकशी की[3] और दुन्या की ज़िन्दगी को तरजीह़ दी, तो बेशक जहन्नम ही उस का ठिकाना है। और वोह जो अपने रब के हुज़ूर खड़े होने से डरा और नफ़्स को[4] ख़्वाहिश से रोका तो बेशक जन्नत ही ठिकाना है।

या रब्बे मुस्तफ़ा عَزَّوَجَلَّ ! हमें मौत व क़ब्रो ह़श्र की तय्यारी की तौफ़ीक़ दे, हमारा ईमान सलामत रख और नज़्ए रूह़ में आसानी दे, सकरात में अपने प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का जल्वा नसीब फ़रमा। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

1 : या'नी जब दूसरी बार सूर फूंकने पर लोग क़ब्रों से उठाए जाएंगे। **2 :** या'नी दुन्या में जो भी नेकियां और बदियां की थीं उन को याद करेगा। **3 :** या'नी ह़द से गुज़रा और कुफ़्र इख़्तियार किया। **4 :** ह़राम चीज़ों की।

नज़अ़ के वक़्त मुझे जल्वए महबूब दिखा

तेरा क्या जाएगा मैं शाद मरूंगा या रब !

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए **सुन्नत** की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं । ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत, नोशए बज़्मे जन्नत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह **जन्नत** में मेरे साथ होगा । (اِبنِ عَساکِر ج۹ص۳۴۳)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आक़ा

जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"क़ुबूर की ज़ियारत सुन्नत है" के सोलह ह़ुरूफ़ की निस्बत से क़ब्रिस्तान की ह़ाज़िरी के 16 म-दनी फूल

۞ नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم का फ़रमाने अ़ज़ीम है : मैं ने तुम्हें ज़ियारते क़ुबूर से मन्अ़ किया था, लेकिन अब तुम क़ब्रों की ज़ियारत करो क्यूं कि येह दुन्या में बे रग़बती का सबब और आख़िरत की याद दिलाती है (اِبن ماجہ ج ۲ص۲۵۲حدیث۱۵۷۱) ۞ क़ुबूरे मुस्लिमीन की ज़ियारत सुन्नत और मज़ाराते औलियाए किराम व शु-हदाए उ़ज़्ज़ाम

رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام की हाज़िरी सआ़दत बर सआ़दत और इन्हें ईसाले सवाब मन्दूब (या'नी पसन्दीदा) व सवाब[1] ۞ (**वलिय्युल्लाह** के मज़ार शरीफ़ या) किसी भी मुसल्मान की **क़ब्र** की ज़ियारत को जाना चाहे तो मुस्तह़ब येह है कि पहले अपने मकान पर (ग़ैरे मक्रूह वक़्त में) दो रक्अ़त नफ़्ल पढ़े, हर रक्अ़त में **सू-रतुल फ़ातिह़ा** के बा'द एक बार **आ-यतुल कुर्सी** और तीन बार **सू-रतुल इख़्लास** पढ़े और उस नमाज़ का सवाब साहिबे **क़ब्र** को पहुंचाए, **अल्लाह तआ़ला** उस फ़ौत शुदा बन्दे की **क़ब्र** में **नूर** पैदा करेगा और इस (सवाब पहुंचाने वाले) शख़्स को बहुत ज़ियादा सवाब अ़त़ा फ़रमाएगा[2] ۞ मज़ार शरीफ़ या **क़ब्र** की ज़ियारत के लिये जाते हुए रास्ते में फ़ुज़ूल बातों में मश्ग़ूल न हो[3] ۞ **क़ब्र** को बोसा न दें, न **क़ब्र** पर हाथ लगाएं[4] बल्कि **क़ब्र** से कुछ फ़ासिले पर खड़े हो जाएं ۞ **क़ब्र** को सज्दए ता'ज़ीमी करना **ह़राम** है और अगर इबादत की निय्यत हो तो **कुफ़्र** है[5] ۞ क़ब्रिस्तान में उस आ़म रास्ते से जाए, जहां माज़ी में कभी भी मुसल्मानों की क़ब्रें न थीं, जो रास्ता नया बना हुवा हो उस पर न चले "रद्दुल मोह़्तार" में है (क़ब्रिस्तान में क़ब्रें पाट कर) जो नया रास्ता निकाला गया हो उस पर चलना **ह़राम** है[6] बल्कि नए रास्ते का सिर्फ़ गुमान हो तब भी उस पर चलना ना जाइज़ व गुनाह है[7] ۞ कई मज़ाराते औलिया पर देखा गया है कि ज़ाइरीन की सहूलत की ख़ातिर मुसल्मानों की क़ब्रें मिस्मार (या'नी तोड़फोड़) कर के फ़र्श बना दिया जाता है, ऐसे फ़र्श पर लैटना, चलना, खड़ा होना, तिलावत व ज़िक्रो अज़्कार के लिये

1 : फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 9, स. 532 **2 :** عالمگیری ج۵ص۳۵۰ **3 :** ایضاً **4 :** फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 9, स. 522, 526 **5 :** माख़ूज़ अज़ फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 22, स. 423, **6 :** دُرِّمُختار ج۱ ص۶۱۲ **7 :** رَدُّالْمُحتار ج۳ص۱۸۳

बैठना वग़ैरा **ह़राम** है, दूर ही से फ़ातिह़ा पढ़ लीजिये ۞ ज़ियारते क़ब्र मय्यित के मुवा-जहा में (या'नी चेहरे के सामने) खड़े हो कर हो और उस (या'नी क़ब्र वाले) की पाइंती (या'नी क़दमों) की त़रफ़ से जाए कि उस की निगाह के सामने हो, सिरहाने से न आए कि उसे सर उठा कर देखना पड़े[1] ۞ क़ब्रिस्तान में इस त़रह़ खड़े हों कि क़िब्ले की त़रफ़ पीठ और क़ब्र वालों के चेहरों की त़रफ़ मुंह हो इस के बा'द कहिये :

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا اَهْلَ الْقُبُوْرِ يَغْفِرُ اللّٰهُ لَنَا وَلَكُمْ اَنْتُمْ لَنَا سَلَفٌ وَّنَحْنُ بِالْاَثَرِ

तरजमा : ऐ **क़ब्र** वालो ! तुम पर सलाम हो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारी और तुम्हारी मग़्फ़िरत फ़रमाए, तुम हम से पहले आ गए और हम तुम्हारे बा'द आने वाले हैं[2] ۞ जो क़ब्रिस्तान में दाख़िल हो कर येह कहे :

اَللّٰهُمَّ رَبَّ الْاَجْسَادِ الْبَالِيَةِ وَالْعِظَامِ النَّخِرَةِ الَّتِىْ خَرَجَتْ مِنَ الدُّنْيَا وَهِىَ بِكَ مُؤْمِنَةٌ اُدْخِلْ عَلَيْهَا رَوْحًا مِّنْ عِنْدِكَ وَسَلَامًا مِّنِّىْ

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! (ऐ) गल जाने वाले जिस्मों और बोसीदा हड्डियों के रब ! जो दुन्या से ईमान की ह़ालत में रुख़्सत हुए तू उन पर अपनी रह़मत और मेरा सलाम पहुंचा दे । तो **ह़ज़रते** सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ السَّلَام से ले कर इस वक़्त तक जितने मोमिन फ़ौत हुए सब उस (या'नी दुआ पढ़ने वाले) के लिये दुआए मग़्फ़िरत करेंगे[3] ۞ शफ़ीए मुजरिमान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने शफ़ाअ़त निशान है : जो शख़्स क़ब्रिस्तान में दाख़िल हुवा फिर उस ने **सू-रतुल फ़ातिह़ा, सू-रतुल इख़्लास** और **सू-रतुत्तकासुर**

1 : फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 9, स. 532 **2 :** عالمگیری ج۵ص۳۵۰

3 : مُصَنَّف ابن اَبی شَیْبہ ج۸ ص ۲۵۷

पढ़ी फिर येह दुआ मांगी : **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं ने जो कुछ कुरआन पढ़ा उस का सवाब इस क़ब्रिस्तान के मोमिन मर्दों और मोमिन औ़रतों को पहुंचा। तो वोह तमाम मोमिन क़ियामत के रोज़ उस (या'नी ईसाले सवाब करने वाले) के सिफ़ारिशी होंगे[1] ۞ ह़दीसे पाक में है : ''जो ग्यारह बार **सू-रतुल इख़्लास** या'नी قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَد (मुकम्मल सूरह) पढ़ कर इस का सवाब मुर्दों को पहुंचाए, तो मुर्दों की गिनती के बराबर उसे (या'नी ईसाले सवाब करने वाले को) सवाब मिलेगा''[2] ۞ **क़ब्र** के ऊपर **अगरबत्ती** न जलाई जाए इस में सूए अदब (या'नी बे अ-दबी) और बदफ़ाली है हां अगर (ह़ाज़िरीन को) ख़ुश्बू (पहुंचाने) के लिये (लगाना चाहें तो) **क़ब्र** के पास ख़ाली जगह हो वहां लगाएं कि ख़ुश्बू पहुंचाना मह़बूब (या'नी पसन्दीदा) है[3] ۞ आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه एक और जगह फ़रमाते हैं : ''सह़ीह़ मुस्लिम शरीफ़'' में ह़ज़रते अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी, उन्हों ने दमे मर्ग (या'नी ब वक़्ते वफ़ात) अपने फ़रज़न्द से फ़रमाया : ''जब मैं मर जाऊं तो मेरे साथ न कोई नौह़ा करने वाली जाए न **आग** जाए''[4] ۞ क़ब्र पर चराग़ या **मोमबत्ती** वग़ैरा न रखे कि येह आग है हां रात में राह चलने वालों के लिये रोशनी मक़्सूद हो तो क़ब्र की एक जानिब ख़ाली ज़मीन पर **मोमबत्ती** या चराग़ रख सकते हैं।

हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ दो कुतुब (1) **312** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब ''**बहारे शरीअ़त**'' ह़िस्सा **16** और (2) **120** सफ़ह़ात की किताब ''**सुन्नतें और आदाब**''

---

1 : شَرْحُ الصُّدُور ص۳۱۱ **2 :** دُرِّمُختار ج۳ص۱۸۳ **3 :** फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 9, स. 482, 525 मुलख़्ख़सन **4 :** مُسلِم ص۷۵ حدیث۱۹۲

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की । (عبدالرزاق)

हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये । सुन्नतों की तरबियत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दा 'वते इस्लामी** के **म-दनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है ।

लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो
होंगी ह़ल मुश्किलें क़ाफ़िले में चलो ख़त्म हों शामतें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

येह रिसाला पढ़ लेने के बा 'द सवाब की निय्यत से किसी को दे दीजिये

ग़मे मदीना, बक़ीअ़,
मग़्फ़िरत और बे ह़िसाब
जन्नतुल फ़िरदौस में
आक़ा के पड़ोस का त़ालिब

रबीउ़ल अव्वल 1438 सि.हि.
दिसम्बर 2016 ई.

ماٰخذ و مراجع

کتاب	مطبوعہ
قرانِ کریم	✲ ✲ ✲ ✲
بخاری	دارالکتب العلمیۃ بیروت
مسلم	دارابن حزم بیروت
ابن ماجہ	دارالمعرفۃ بیروت
مسند امام احمد	دارالفکر بیروت
مصنف ابن ابی شیبہ	دارالفکر بیروت
مستدرک	دارالمعرفۃ بیروت
کتاب ذم الدنیا	المکتبۃ العصریۃ بیروت
ابن عساکر	دارالفکر بیروت
جمع الجوامع	دارالکتب العلمیۃ بیروت
الزھد	دارالغد الجدید المنصورۃ مصر

کتاب	مطبوعہ
الروض الفائق	کوئٹہ
احیاء العلوم	دارصادر بیروت
تنبیہ الغافلین	دارالکتاب العربی بیروت
روض الریاحین	دارالکتب العلمیۃ بیروت
شرح الصدور	مرکز اہلسنّت برکات رضا الہند
درمختار	دارالمعرفۃ بیروت
ردالمحتار	دارالمعرفۃ بیروت
عالمگیری	دارالفکر بیروت
فتاوٰی رضویہ	رضا فاؤنڈیشن مرکز الاولیا لاہور
حدائق بخشش شریف	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
وسائل بخشش (مرمم)	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی

صلی اللہ علی محمد — اللہ عزوجل — صلی اللہ علی محمد

آہ! غفلت ...... الموت

کاش! مدینے میں ... الموت

جرم کو نہ شرماؤ احباب! کفن ڈھک دو
منہ دیکھ کے کیا ہوگا پردے میں رہنے دو

پہلو بارِ غم سہے نہ تحمل دوش عزیزاں
للہ مری نعش کر اے جانِ چمن پھول

آہ! کاش! الموت

الموت

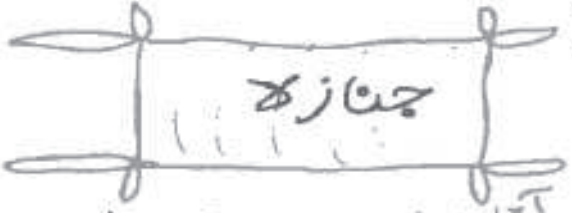

الموت

اب مسکراتے آیئے سوئے گنہگار
آقا! اندھیری قبر میں عطار آ گیا

کاش! جنت البقیع ... مدفن

الموت

محمد الیاس قادری

٨ جمادی الاولی ١٤٣٦ھ

کاش! بے حساب مغفرت ...